13 ज्न, 1985

सं. भ्रो.वि./एफ.डी./45-85/25467.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि 1. परिवहन भ्रायुक्त, हरियाणा, चन्डीगढ़ 2. हरियाणा राज्य परिवहन, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री इसलाम्दीन तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

भ्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिशिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिसूचना की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री इसल(मूदीन की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. म्रो.वि./एफ.डी./89-85/25475.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. एस० जे० निटिंग एन्ड फिनिशिंग मिल्ज लि०, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री करण सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीदोगिक विवाद है;

भीर चूंकि राज्यपाल हरियाण। इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये अब, ग्रीद्योगिक विवाद प्रिवित्यम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारों ग्रीविस्चना सं० 5415-3-अम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रीविस्चना सं० 11495-जा-अम-57/11245, दिनांक 7 फ वरी, 1958 द्वारा उक्त मिस्सिस्चना की धारा 7 के श्रीद्वीन गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उन्ते सुसंगत या उन्ते सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्राथवा संबंधित मामला :--

क्या श्री करण सिंह को सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार हैं ?

दिनांक 1 जुलाई 1985

सं. मो.वि./एफ.डी./96-85/27328.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. बी. एस. एफ. इन्डस्ट्रीज, 5 डी 8 ई, रेलवे रोड़, एन. म्राई. ट्यु., फ़रीदाबाद, के श्रामिक श्री दिनेश सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई मौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निदिंग्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिये, ग्रब ग्रोद्योगिक विवाद ग्रिविनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिविम्बना सं 5415-3-श्रम-68/5254, दिनांक 20 जून, 1968 के लिथ पढ़ते हुए ग्रिविम्बना सं 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिविनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरोदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत था उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि प्रबन्धकों तथा श्रमिल के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है :--

क्या भी दिनेश सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, वो वह किस राहत का हकदार है?